उत्तरार्ध १५८

२३०७

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ~~१२४८~~ १०६ (४३२)

ग्रंथ नाम चिद्गगन मार्ग

विषय म० वेदांत

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

मराठी

४.२०

मृत्युंजयकृत संकेतप्रबंध

विहंगममार्गमीनमार्ग

४३४ वे: १२३
१३ तेविस

६३७ वे १६६

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(1)

श्रीराम श्रीराम श्रीराम श्रीराम श्रीराम श्रीराम श्रीरामराम
श्रीराम राम राम श्रीराम राम श्रीराम राम जयराम जय जयराम

अथ मृत्युंजयकृत संकेतु प्रबंध विहंगम मार्गी मीन मार्गी प्रारंभः ॥ राम ॥
श्लोक ॥ ब्रह्मदेव अत्रिगुणो विनायक सरस्वति ॥ भारति बृहस्पति व्यासः सर्वे ते शिवतं स्मरेतू ॥ १ ॥

राम कृष्ण गोविंद राम कृष्ण गोविंद राम कृष्ण गोविंद

श्रीराम राम श्रीराम जयराम जय जयराम श्रीराम जयराम जयराम
शिवराम गोविंद नारायण महादेव राधाकृष्ण राधाकृष्ण राम गोविंद

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(2)

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुगणपतिबृहद्दिष्टदे
वताभ्योनमः ॥ गुरवेसर्वलोकानांभिषजेभवरोगि
णां ॥ निधयेसर्वविद्यानांदक्षिणामूर्तयेनमः ॥
१ ॥ गणनाथसरस्वतिरविशुक्रबृहस्पति ॥ पंचे
तानिस्मरेन्नित्यंवेदवाणिप्रवर्तते ॥ २ ॥ गुरु
र्ब्रह्मागुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवोमहेश्वरः ॥ गुरुःसाक्षा
त्परब्रह्मतस्मैश्रीगुरवेनमः ॥ ३ ॥ ब्रह्मानंदंप
रमसुखदंकेवलंज्ञानमूर्तिं ॥ द्वंद्वातीतंगगनस
दृशंतत्वमस्यादिलक्ष्यं ॥ एकंनित्यंविमलमचलं
सर्वधीसाक्षिभूतं ॥ भावातीतंत्रिगुणरहितंस
द्गुरुंतन्नमामि ॥ ४ ॥ मागंमिनुब्यामीनंन्च त्रि

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(3)

वि॰मा॰ भुलोकेषु दुर्लभं ॥ यः भ्दक्त्या पठते नित्यं स मु मीनमा॰
क्तो भवसागरात् ॥ ५ ॥ वज्रदंष्ट्रा ध्यान ॥ वंदे
१ वानरनारसिंन्ह खगराट क्रोडाश्व वक्त्रांचि
तं ॥ नानालंकरणं त्रिपंचनयनं देदीप्यमान
हरं ॥ हस्ताब्जैरसिखेटं पुस्तकसुधाकुंभांकु
शाद्रिं हलं ॥ खट्वांगं फणिभूरुहं च दधतं ग
र्वादि दर्पापहं ॥ [illegible] ॥ ध्यायेदाजानुबाहु
धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं ॥ पीतं वासो व
सानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नं ॥ वामां
कारूढसीतामुखकमल मिलल्लोचनं नीरदा
भं ॥ नानालंकारदीप्तं दधतमरूजटामंडनं राम १

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai.

(3A)

चंद्रं ॥ १ ॥ माताराामो मत्पिता रामचंद्रः स्वामी
रामो मत्सखा रामचंद्रः ॥ सर्वस्वं मे रामचंद्रो द
यालो नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥ २ ॥ ततो ज
गन्मंगलमंगलात्मना विधाय रामायणमुत्त
मं ॥ चचार पूर्वाचरितं रघूत्तमो राजर्षिवर्यैरपि
सेवितं यथा ॥ ३ ॥ सौमित्रिणा पृष्ट उदारबुद्धि
ना रामः कथाः प्राह पुरातनीः शुभाः ॥ राज्ञः
प्रमत्तस्य नृगस्य शापं द्विजस्य तिर्यक्त्वमथा
ह राघवः ॥ ४ ॥ कदाचिदेकांतउपस्थितं प्रभुं रा
मं रमालालितपादपंकजम् ॥ सौमित्रिरासादित
शुद्धभावनः प्रणम्य भक्त्या विनयान्वितोऽब्रवीत् ॥ ५ ॥

कीर्ति

ई. म.

श्री. म.

(५)

वि॰म॰ अंगुष्ठाभ्यां उभे श्रोत्रे तर्जनीभ्यां विलोचने ॥ मी॰मा॰

नासारंध्रे मध्यमाभ्यां मन्याभ्यां वदनं दृढं

२ ॥ निरूध्य मारूते योगियदैव कुरूते भृशं ॥

तदा तत्क्षणमात्मानं ज्योतिरूपं सपश्यति ॥

२ ॥ तत्तेजोदर्शनं दिव्यं सर्वपापहरं शुभं ॥

भुक्तिदं मुक्तिदं चैव प्रोचिरे मुनिपुंगवैः

३ ॥ पिपिलिका विहंगश्च कपिमार्गो हिमीन

कुः ॥ शेषमार्गश्च संख्याता पंचमार्गाः पुरा

तनः ॥ ४ ॥ हंसपरमहंसदेवताभ्यो नमः ॥

॥ ॥ उवि ॥ मत्स्यश्च अनुभवाचार वि ॥

साध्यसाध्य न तिमिरनुर वि ॥ चोहा ग्रंथ विवेक २

२

(5A)

वैभवि ॥ स्रमन सासिध्धि दे ॥ १ ॥ द्दश्यति तु
केञ नात्माजाण ॥ द्दगनो आत्मा सनातन ॥
त्याचा निवाडा सूक्ष्म मने ॥ ग्रंथावलोकने क
रावा ॥ २ ॥ जेणे आपणचि परब्रह्म हे कळे ॥
अज्ञानांधकार वितळे ॥ आत्माचे ईजे कर
तळे ॥ तो हा ग्रंथ स्वात्मसिद्ध ॥ ३ ॥ ५ ॥
श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॥ अता विहंगमाचि
कथा ॥ जानकीपुसे रघुनाथा ॥ त परिसा
वे श्रोता ॥ जी विधरूानया ॥ १ ॥ रामह्म
णे वल्लभे ॥ विहंगम आजोन भे ॥ फळा
वियालाभे ॥ कमसारु मिया ॥ २ ॥
जे ध्वनि अंतगीति ज्योति ॥ नादिठेवि

3

विहंगम मार्ग.

३

लिश्रुति ॥ नेत्रिपा हि आकाश प्रति ॥ तेणे प्रभा
षित ॥ ३ ॥ ॥ अ॰ ८ श्लोक ॥ ॥ प्रयाणकाले
मनसाचलेन भक्त्यायुक्तो योगबलेन चैव ॥
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक्स तं परं पुरुष मु
पैति दिव्यं ॥ १० ॥ उ॰ वि॰ ॥ समचरणि सम नेत्रि
फाकति प्रभा रविकोटि ॥ अर्धनारि नटेश्वर
ऐसे बोलति ॥ ते श्री गुरुनाथे नयनि दाविले ॥
३ ॥ भ्रुभंगा बरुनि दृष्टि ॥ उभय दृष्टि करु
नियेके ॥ अनुमिसे पाति राखे ॥ व्योम गर्भी
४ ॥ गीता ॥ श्लो॰ ॥ ॥ शनै शनैरुपरमेद्बु
ध्या धृतिगृहीतया ॥ आत्मसंस्थं मनः कृत्वा

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai, "Joint project of the"

न किंचिदपि चिंतयेत् ॥ ॥ उवि ॥ हा अभ्या
सु करिता ॥ परमात्मा देखति तखला ॥ हि नि
राकारि चिवाली ॥ विरळानाणे ॥ ५ ॥ श्लो०
अणुर्बृहत्कृशस्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान्
॥ उवि ॥ अणुचियास हस्वांशे ॥ सूक्ष्मरू
पे पूर्ण दिसे ॥ ते उघडे डोळा भासे ॥ साप्यकाशि
७ ॥ सुवर्णाचा चुर ॥ तैसा दिसे निराकारु ॥
काळिने उठति लारू ॥ अंबरिम भा ॥ ८ ॥
गगन भरत द्योतक ॥ की प्रकाशले रत्नदीपक ॥
तैसे तेज अलौलिक ॥ दृष्टि भासे ॥ ९ ॥ पहाता
अवचिता भासे ज्वाळ ॥ की उठति विजुचे केलाळ

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(८)
विहं॰मा॰

४

४ ता

मी॰मा॰

नानानक्षत्राचागोंधळ ॥ अनेकदिसे ॥
१० ॥ कापूर्णचंद्रउगवले ॥ गगनगाराभ
रूनिठेले ॥ कीअनंतसूर्यउगवले ॥ दृष्टिपु
ढे ॥ ११ ॥ उदितरंगपो शोभिवंत ॥ कीतेज
इंडाकारिदिसत ॥ अर्धचंद्रापरि शोभत ॥
नादबिंदुरूपे ॥ १२ ॥ जेथेकाहिचनाहि ॥
तेथेहि दिसेपाहि ॥ शुन्याचियेडोहि ॥
निरशून्यपरब्रह्म ॥ १३ ॥ जेसिरत्नकळाफा
कत ॥ कीइंद्रनीळडुळमळित ॥ मुक्ताफळि
भरित ॥ अंबरपूर्ण ॥ १४ ॥ ॥ श्रुति ॥
मध्येवसकरुजातंमयिसर्वेप्रतिष्ठितं ॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(6A)

मयिसर्वलयं याति तन्ब्रह्माद्वयमस्म्यहं ॥
उवि ॥ मायाविलासे विपरीत भासु ॥ प्रपंचवि
स्तार तुझा विलासु ॥ उत्पन्नला पाहून आ
णि नाशु ॥ याचे मना कारण तु परेशु ॥ १५
क्षणक्षण्या होये पालट ॥ चरि नाना रूपे नट
येकचि परि कोटिस्य ॥ चैतन्य जाणे ॥ १६ ॥ सर्व
ब्रह्मेति ह्मणति श्रुति ॥ खेचरि मुद्रा अवलो
किति ॥ आकाशा तेजोन्मय देखति ॥ चिन्म
यरूपे ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ रक्तं श्वेतं तथा श्यामं कृष्णं
नीलपीतादिशोभितं ॥ तन्मध्ये व्यापितं येन
तज्ज्योतिर्ब्रह्मकेवलं ॥ १ ॥ उवि ॥ पीतश्वेत

विहं॰ मा॰ मीनमा॰
म ५ ॥

(७)

रक्तप्रभा ॥ नीळ कृष्ण हरित शोभा ॥ पंचवर्णा दि
नभा ॥ भूतिहावि ॥ १८ ॥ सोहं मात्म मूर्ति॰
देखणे देख सदा वरति ॥ पंचरंगाचे शुद्ध अंग
णि ॥ रामराया निद्रा स्वविलिनय नि ॥ १९
रक्तश्वेत श्याम वर्ण ॥ निळे असे मु सुरे प्र
माण ॥ त्यामाजि ज्योतजाण ॥ प्रकाशिलि असु
से ॥ २० ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ सर्वोपाधि विनिर्मु
क्तं सत्तामात्रं मगोचरं ॥ आनंदं निर्मलं शांतं नि
र्विकारं निरंजनं ॥ १ ॥ उवि ॥ ऐसे अलोलि
क परब्रह्मतेज ॥ त्याहाळिता दिसेल सहज ॥
ते मि सांगितले तुज ॥ सिता देवी ॥ २१ ॥ सहा
चार हे वेद बोलति ॥ शब्द खोलति ॥ मौन्य रा

शुद्ध

५

(7A)

हति ॥ न कळे हाणून ॥ २२ ॥ ॥ श्रीश्लोक ॥
इक्षोगुडंशर्कराच श्रीगंधेच स्कंगंधिता ॥
क्षीरेआज्यंच यहृच्च तिळे तैलं तथात्मता ॥
१ ॥ साधनेन विनाप्राप्तं गुरुवाक्येन नि
श्चितं ॥ स्वात्मानं हृदि पश्येत्तु प्रत्यक्षं ज्यो
तिरूपकं ॥ २ ॥ आत्मा हे शुद्ध परं ज्योति निर्म
ळ ॥ गुरुमुखे आकळ ॥ पहाता स्करवाचा स्फ
काळ ॥ जाण होय ॥ २३ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥
न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न च क्रियाभिर्न तपो
भिरुग्रैः ॥ एवंरूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं
त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥ ॥ उवि ॥ ॥

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

विश्वासहीनेभ्रमतिकपाटे ॥ अनेककर्मेंक
रितिकचाटे ॥ त्यालागितेसेफळयेतहोता ॥
चुकोनिगेलेभुललेअहंता ॥ २४ ॥ मनिध
रुनियाविश्वास ॥ करुनिपाहेअभ्यास ॥
देखसिपरमहंस ॥ याचिडोळां ॥ २५
जरिस्वरूपदेखावे ॥ तैसेदृश्यरूपपरिसा
वे ॥ तरियापरितेदेखावे ॥ नदिसेजाणसिते
२६ ॥ देखणेरूपासअव्यवाकार ॥ सगुण
रूपतेसाकार ॥ तरियाहुनिसार ॥ आणि
कनाहि ॥ २७ ॥ जरिदृष्टिदेखणे ॥ तैसेतु
कल्पिसिकल्पने ॥ तरियाहुनिनदिसे

(8A)

प्रत्यक्षकाहि ॥ २८ ॥ जेयाहुनिदेखसिज
डे ॥ रूपाकारतेथोकडे ॥ हे अतिसूक्ष्म
परिवाडे ॥ सकळाहुनि ॥ २९ ॥ अता
दृश्यादृश्यरूपयाचे ॥ दिसेनदिसेपरि
असेसाचें ॥ हेदेखणेंज्ञानदृष्टिचे ॥
याहुनिनाहि ॥ ३० ॥ ॥ श्रुति ॥ ॥
नभूमिरापोनचवन्हिर्नवायुर्नचाकाशस्तिनंचा नि
लोमेस्तिनचांबरंच ॥ एवंविदित्वापर
मात्मरूपं गुहाशयं निष्कलमद्वि
तीयं ॥ समस्तसाक्षिंसदसद्विही

नंप्रयातिशुद्धंपरमात्मरूपं ॥ ५९ ॥ उवि ॥
हेनव्हेपृथ्विनाकठिण ॥ आपनव्हेनाद्रवणप
ण ॥ तेजनव्हेनाउसण ॥ अग्निरूप ॥ ३१
वायोनव्हेनातोचंचळ ॥ अकाशनव्हेनापोक
ळ ॥ सूर्यनव्हेनासीतळ ॥ चंद्रमाहि ॥ ३२
नव्हेपंचभुतेसाभास ॥ ना पंचभुताचेपंचे
विसअंश ॥ आपोआपस्वयंप्रकाश ॥ सक
ळातीत ॥ ३३ ॥ हेपंचभुतनमिळे ॥ नाकासि
याते आकळे ॥ अवघियानिराळे ॥ निजरू
प ॥ ३४ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ दृष्टिद्वयसमत्वेन
गुरुनेत्रेचपश्यति ॥ ज्ञातव्यंचतदातुर्यां चित्त

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(9A)

स्थिरमिदंभवेत् ॥ ३ ॥ उवि ॥ हेपहातपहा
तादिसे ॥ मग निरंतरप्रकाशे ॥ रात्रंदिवस
असे ॥ दृष्टिपुढे ॥ ३५ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥
नतद्भासयतेसूर्योनशशांकोनपावकः ॥ य
द्गत्वाननिवर्ततेतद्धामपरमंमम ॥ ॥
उवि ॥ हेपिंडब्रह्मांडातित ॥ परब्रह्मसूर्यबिं
बत ॥ स्वयंतेजसदोदित ॥ स्वयंप्रकाश ॥
३६ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ धूमेनाव्रियतेवन्हिर्यथा
दर्शोमलेनच ॥ यथोल्बेनावृतागर्भस्तथादे
नेदमावृतं ॥ ॥ श्लो० ॥ राहुग्रस्तदिवाक
रेंदुसदृशोमायासमाच्छादनात् ॥ १ ॥

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

विहं॰

८

(१०)

॥ उवि ॥ या ज्ञाड अंधार असे ॥ तेणे कवणा

शिन प्रकाशे ॥ तटस्थ खुट लिहष्टि प्रवेशे ॥

त रि उ चढ होये ॥ ३७ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥

एकं च मृत्झांड मनेक रूपं गोक्षीर मेकं बहु

रूप धेनुः ॥ सुवर्ण मेकं बहु भूषणानि ज्ञारी

र भिन्नं परमात्म मेकं ॥ १ ॥ उवि ॥ अनंत

सूर्यांचा बिंबि ॥ स्वरूप भरले दिसे सिन भि

न्नाना रूपे ज्ञाविपरिस्वयांभे ॥ एक चि असे ॥

३८ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ तारकं च भवे ब्रम्हा

दंडकं विष्णुरुच्यते ॥ कुंडलं हि तथा रुद्रो अ

र्धचंद्रः स ईश्वरः ॥ बिंदुः सदाशिवः प्रो

मीन॰

अ॰

१

८

(10 A)

क्षोभणवेपंचदेवता : ॥ ११ ॥ उवि ॥ ब्रह्मातोतारा
रूपे ॥ विष्णुतोदंडस्वरूपे ॥ कुंडलतोरुद्ररूपे ॥ जा
णत्रिये ॥ ३९ ॥ अर्धचंद्राकारतोईश्वरु ॥ ज्योति
सदाशिवनिर्धारु ॥ अणिकभासेसर्पाकारु ॥ तोशे
षशायनुसारायणु ॥ ४० ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥
भिन्नानसोनदिसतिजळभिन्नगारा वस्त्रेवशुभ्र
कठिणाम्रुदुथंडगारा ॥ तैसेचिब्रह्मउदधितिलविं
द्रवगारा वाजेजसानिगमभूपतिचानगारा ॥ १ ॥
उवि ॥ दिसतिनानातेजांचेगुंडाळे ॥ लाटातरंगकि
ळे ॥ परितेस्वरूपसगळे ॥ येकचिअनेक ॥ ४१ ॥
श्लोक ॥ कदाचिदात्मानम्रुतोनजायतेनक्षीयते
नापिविवर्धतेनव : ॥ निरस्तसर्वातिशयः सुखा

A joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com